2020

HINDI — HONOURS

Paper : DSE-B-2

(Chhayavad)

Full Marks : 65

The figures in the margin indicate full marks.

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

1. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2×10

(क) प्रसाद की किस रचना को विरह काव्य माना गया है तथा इसका प्रकाशन वर्ष क्या है?

(ख) 'अपलक जगती हो एक रात' – कविता किस काव्य-संग्रह में संकलित है और उसका प्रकाशन वर्ष क्या है?

(ग) निराला की किन्हीं दो प्रगतिवादी रचनाओं के नाम लिखिए।

(घ) बाँधो न नाव इस ठाँव बंधु.....
रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए और इसके रचयिता का नाम बतलाइए।

(ङ) 'उड़ रहा नित एक सौरभ-धूम लेखा में बिखर तन' – पंक्ति किस कविता से ली गई है और इसके रचनाकार कौन हैं?

(च) हिन्दी कविता में 'मुक्त छंद' का प्रारंभ किसने किया? उनके किसी एक काव्य-संग्रह का नाम बताइए।

(छ) 'यामा' काव्य-संग्रह पर महादेवी वर्मा को कौन-सा पुरस्कार प्राप्त हुआ और इस संग्रह का प्रकाशन वर्ष क्या है?

(ज) पंत की किस रचना को 'छायावाद का मैनीफेस्टो' कहा गया है? उन्हें क्या कहकर संबोधित किया गया है?

(झ) पंत को किस कृति के लिए 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' मिला और कब?

(ञ) कवि जयशंकर प्रसाद की देशप्रेम से संबंधित किन्हीं दो कविताओं के नाम लिखिए।

2. किन्हीं ***तीन*** लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 5×3

(क) 'बादल-राग' कविता में अभिव्यंजित क्रांति के स्वर को स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'दीप' कविता का मूल-भाव स्पष्ट कीजिए।

(ग) 'बाँधो न नाव इस ठाँव बंधु' – कविता की मूल-संवेदना स्पष्ट कीजिए।

(घ) पंत के प्रकृति चित्रण पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(ङ) महादेवी वर्मा की कविता में निहित 'विरह-भावना' को स्पष्ट कीजिए।

3. किन्हीं ***तीन*** आलोचनात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 10×3

(क) जयशंकर प्रसाद प्रेम और सौंदर्य के कवि हैं— सटीक उत्तर दीजिए।

(ख) निराला की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(ग) 'बीन भी हूँ...' कविता का विश्लेषण कीजिए।

(घ) छायावादी विशेषताओं के आधार पर पंत के काव्य का मूल्यांकन कीजिए।

(ङ) किसी *एक* काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिएः

(अ) जनता पर जादू चला राजे के समाज का।
लोक-नारियों के लिए रानियाँ आदर्श हुई।
धर्म का बढ़ावा रहा धोखे से भरा हुआ।
लोहा बजा धर्म पर, सभ्यता के नाम पर।
खून की नदी बही।

अथवा,

(आ) आग हूँ जिससे ढुलकते बिन्दु हिमजल के,
शून्य हूँ जिसको बिछे हैं पाँवड़े पल के,
पुलक हूँ वह जो पला है कठिन प्रस्तर में,
हूँ वही प्रतिबिंब जो आधार के उर में,
नील घन भी हूँ सुनहली दामिनी भी हूँ!